④ कुमारदास – कुमारदास के जीवन परिचय में कई भ्रान्तियाँ हैं, वस्तुतः कुमारदास एक कवि थे, राजा नहीं। दन्तकथाओं में परस्पर तारतम्य न होने एवं जानकीहरण की पाण्डुलिपियों में असंगति के कारण इनके बारे में प्रामाणिक सूचना पाने में कठिनाई है।

'जानकीहरण' कुमारदास की एकमात्र रचना है। इसमें बीस सर्ग हैं। जानकीहरण की सर्गानुसार कथा में अयोध्या, दशरथ तथा उनकी रानियों का वर्णन, रावण का चरित्र बृहस्पति, राम-सीता का विवाह, विवाह के बाद भाईयों का अयोध्या पहुँचना, राम-हनुमान की मित्रता, लंकादहन, सेतुबन्ध, अंगद का रावण की सभा में जाना, युद्धवर्णन, राम की विजय।

महाकाव्यों की अलंकारवादी प्रवृत्ति के युग में वसकी रचना हुई। संध्या, सूर्यास्त, अन्धकार, चन्द्रोदय आदि की अलंकृत वर्णन कवि के प्रकृति-प्रेम का सूचक है। ए० बी० कीथ ने कुमारदास की प्रशंसा में कहा है—

"सौन्दर्य सम्भवतः कुमारदास की प्रधान विशेषता है; उनकी कविता में प्रसादयुक्त शैली में ध्वनि और छन्द के सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त की गई सुरुचिपूर्ण कल्पनाएँ बहुलता से पाई जाती है। संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई भाषा उक्त प्रकार के सौन्दर्य को उत्पन्न कर ही नहीं सकती।"

माघ – शिशुपालवध- नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ का स्थान संस्कृत-महाकवियों में विशेष महत्त्व रखता है।

'शिशुपालवध' – यह माघकवि की एकमात्र कृति बीस सर्गों के महाकाव्य के रूप में है। देवर्षि नारद के द्वारा इन्द्र का संदेश द्वारकापुरी में कृष्ण को मिलता है, जिसमें शिशुपाल के अत्याचार से जगत् की रक्षा की प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

युधिष्ठिर के यज्ञ में सेना -सहित जाना उचित होगा। यज्ञ में भीष्म द्वारा कृष्ण का सम्मान होने पर शिशुपाल कुपित होता है और उनके प्रति अशिष्ट व्यवहार करता है। कृष्ण उसका वध कर देते हैं। इस मूल कथानक को माघ ने कलात्मकता और विविध वर्णनों का प्रयोग करके बड़ा बना दिया है।

स्पष्टतः यह कथानक महाभारत के सभापर्व से लिया गया है, जिसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल के मारे जाने की कथा है।

भारवि के काव्य के समान इस महाकाव्य में भी कथानक और चरित्र -चित्रण का महत्त्व नहीं है। यहाँ परम्परागत वर्णनों का इतना प्राचुर्य है कि प्रायः दस सर्गों तक मूल कथानक व्याहत हो गया है। कलापक्ष और भावपक्ष - दोनों को सजाने - संवारने की प्रवृत्ति माघ में पुष्कल रूप से है।

(5) रत्नाकर — 'हरविजय' - यह संस्कृत -भाषा का विशालतम महाकाव्य है, जिसमें पचास सर्ग तथा 4321 पद्य है। इसमें शिव से अन्धकासुर के जन्म तथा शिव द्वारा ही उसके संहार की कथा - वर्णित है। ~~लघुकाय~~ लघुकाय कथा होने के कारण एवं वर्णनों से फैलाव के कारण इसमें कथा - प्रवाह प्रायः समाप्त है।

रत्नाकर ने माघ के समान अपने महाकाव्य में के समान अपने महाकाव्य को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने का -अत्यधिक प्रयास किया है।

(6) क्षेमेन्द्र — के महाकाव्यों में प्राचीन प्रसिद्ध - ग्रंथों के नवी काव्य रूपान्तर ही हैं। 'रामायणमंजरी' एवं 'भारतमंजरी' ये दोनों उनके महाकाव्य हैं, जिसमें रामायण तथा महाभारत की मुख्य कथाओं का संक्षेपण है।

Uma Pandey
B.A [illegible] Hons.
S K [illegible]